ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 9, Issue 2, February 2019 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

वर्तमान परिदृश्य में भारत - अमेरिका संबंध

डॉ० आशीष कुमार लाल
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग, एम० एल० के० (पी०जी०) कॉलेज बलरामपुर
(उ० प्र०)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और अमेरिका दोनों देशों का इतिहास कई मामलों में समान रहा है। दोनों ही देशों ने औपनिवेशिक सरकारों के खिलाफ संघर्ष कर स्वतंत्रता प्राप्त की (अमेरिका वर्ष 1776 और भारत वर्ष 1947) तथा स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में दोनों ने शासन की लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाया परंतु आर्थिक और वैश्विक संबंधों के क्षेत्र में भारत तथा अमेरिका के दृष्टिकोण में असमानता के कारण दोनों देशों के संबंधों में लंबे समय तक कोई प्रगति नहीं हुई। अमेरिका पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का समर्थक रहा है, जबकि स्वतंत्रता के बाद भारत में विकास के संदर्भ में समाजवादी अर्थव्यवस्था को महत्त्व दिया। इसके अतिरिक्त शीत युद्ध के दौरान जहाँ अमेरिका ने पश्चिमी देशों का नेतृत्व किया, वहीं भारत ने गुटनिरपेक्ष दल के सदस्य के रूप में तटस्थ बने रहने की विचारधारा का समर्थन किया।

वर्तमान दौर

भारत और अमरीका दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं, जिनमें काफी समानताएं हैं। भारत और अमरीका के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ता जा रहा है और आने वाले वर्षों में और अधिक बढ़ने की संभावना है। इसी प्रकार सैन्य सहयोग भी बढ़ा है। बहरहाल, अमरीका भारतीय उपमहाद्वीप में स्थिरता की वकालत करता रहा है, जिसमें कश्मीर मुद्दे पर तनाव कम करना और परमाणु हथियारों के प्रसार व परीक्षण का परित्याग भी शामिल है। यह अब अच्छी तरह स्थापित हो चुका है कि दोनों देशों के पास एक–दूसरे को देने के लिए बहुत कुछ है। यू. एस. कांग्रेशनल सर्विस ने एक पेपर प्रस्तुत किया है, जिसमें भारत–अमेरिकी संबंधों का बहुत ही अच्छा नवीनतम विश्लेषण दिया गया है।

भारत–अमेरिका के बीच महत्त्वपूर्ण समझौते:

1. सैन्य सूचना समझौते की सामान्य सुरक्षा (General Security Of Military Information Agreement)–वर्ष 2002
2. भारत–अमेरिका परमाणु समझौता (वर्ष 2008)
3. लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (Logistics EUchange Memorandum of Agreement)–वर्ष 2016
5. भारत–अमेरिका सामरिक उर्जा भागीदारी (वर्ष 2017 में घोषित)
6. संचार संगतता और सुरक्षा समझौता (Communications Compatibility and Security Agreement &COMCASI)–वर्ष 2018
7. साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता

भारत और अमेरिका के बीच हुए इन समझौतों से एक बड़ा फायदा ये है कि दोनों देशों के संबंध अब एक नई दिशा में बढ़ चले हैं और ये शायद किसी नई मंजिल तक भी पहुंच जाएं। हो सकता है कि भारत और अमेरिका के बीच सैन्य गठबंधन भी हो जाए लेकिन, अभी वो मंजिल बहुत दूर है जैसा कि पाकिस्तान के उदाहरण से स्पष्ट है कि, जो देश औपचारिक रूप से भी अमेरिका के सहयोगी हैं, उन्हें भी मुसीबत के वक्त अमेरिका से मदद मिलने की कोई गारंटी नहीं होती। लेकिन, कोई इस बात से भी इनकार नहीं कर सकता कि भले ही भारत और अमेरिका के बीच औपचारिक रूप से सैन्य गठबंधन न बने, मगर दोनों देश रक्षा क्षेत्र में सहयोग को काफी बढ़ा सकते हैं।

भारत –अमेरिका सम्बन्धों के लाभ

आर्थिक क्षेत्र में

भारत अमेरिकी सम्बन्धो से आर्थिक क्षेत्र में बड़ी सफलता मिली है। ध्यातव्य है कि अमेरिका विश्व के उन चुनिंदा देशों में शामिल है जिनके साथ भारत का व्यापार अधिशेष रहता है। वर्ष 2018 में भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार 142 बिलियन अमेरिकी डॉलर का रहा, जो वर्ष 2017 के द्विपक्षीय व्यापार से 12.6रू अधिक है। गौरतलब है कि अमेरिका भारतीय सेवा क्षेत्र और अन्य कई उत्पादों के लिये विश्व का सबसे बड़ा बाजार है। वर्ष 2018 में भारत से अमेरिका को हुए निर्यात की कीमत लगभग 54.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर (वर्ष 2017 से 11.9रू अधिक) थी और वर्ष 2018 में ही अमेरिका से लगभग 33. 5 बिलियन डॉलर (वर्ष 2017 से 30.6रू अधिक) की वस्तुओं का आयात किया

गया। ऐसे में इन दोनों देशों की सरकारों के साथ ही व्यापार के क्षेत्र में एक सकारात्मक और स्थिर भविष्य का संकेत मिलता है।

रक्षा और तकनीकी क्षेत्र में

अमेरिका से 30 नए हेलिकॉप्टरों के आयात के साथ ही इनके कुछ उपकरणों को भारत में ही बनाए जाने की योजना है। ध्यातव्य है कि पिछले कुछ वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच रक्षा उपकरणों के व्यापार में तकनीकी के हस्तांतरण को लेकर कई महत्त्वपूर्ण समझौते हुए हैं। इसके साथ ही वर्तमान रक्षा सौदों में सरकारों के साथ–साथ दोनों देशों की रक्षा क्षेत्र से संबंधित निजी कंपनियों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया गया है। जो इस क्षेत्र में उभरती भारतीय निजी क्षेत्र की कंपनियों के लिये सकारात्मक संकेत है। (उदाहरण के लिये लड़ाकू विमानो को बनाने के लिये टाटा और लॉकहीड मार्टिन की साझेदारी)

ऊर्जा क्षेत्र में

भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिये बड़े पैमाने पर अन्य देशों से होने वाले तेल और गैस आयात पर निर्भर रहता है। वर्ष 2017 में भारत ने अमेरिका से 9.6 मिलियन बैरल कच्चे तेल का आयात किया वहीं वर्ष 2018 में यह आयात बढ़कर 48.2 मिलियन बैरल हो गया। अमेरिका से तेल और गैस के आयात को बढ़ाने से ऊर्जा जरूरतों के लिये किसी एक देश पर भारत की निर्भरता में कमी आएगी, जिससे विषम परिस्थितियों में ऊर्जा की जरूरतों को आसानी से पूरा किया जा सकेगा।

भारत अमेरिकी संबंधों से दोनों देशों के नागरिकों के बीच संबंधों को बढ़ाने में यंग इनोवेटर्स इंटर्नशिप परियोजना, महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में–GDP जैसे प्रयासों को रेखांकित किया गया है। इन योजनाओं से भारतीय युवाओं में क्षमता विकास के साथ ही दोनों देशों के नागरिक संबंधों को मजबूत करने में सहायता प्राप्त होगी।

हिंद–प्रशांत क्षेत्र

हिंद–प्रशांत क्षेत्र के संबंध में अमेरिका ने चीन को प्रत्यक्ष रूप से चुनौती देने के बजाय क्षेत्र में सभी हितधारकों को साथ लाने की भारतीय नीति का समर्थन किया जो इस क्षेत्र के संदर्भ में भारतीय दृष्टिकोण से एक बड़ी सफलता है।

अमेरिका से उन्नत तकनीकी के नौसैनिक हेलिकॉप्टरों के आयात और भारत–अमेरिका के संयुक्त युद्धाभ्यासों से भारतीय नौसेना की क्षमता में वृद्धि होगी।

परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (Nuclear Suppliers Group & NSG) और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता पर अमेरिका का समर्थन दक्षिण एशिया तथा हिंद–प्रशांत क्षेत्र में भारत के महत्त्व को दर्शाता है। इसके साथ ही ब्लू डॉट नेटवर्क जैसे प्रयासों से भारत को इस क्षेत्र में चीन के दबाव को कम करने में सहायता मिलेगी।

भारत और अमेरिका के बीच वर्तमान द्विपक्षीय संबंधों का लाभ उठाते हुए भारत को नवीन तकनीकी, रक्षा और अंतरिक्ष जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अमेरिका सहित अन्य देशों से भी व्यापक विदेशी निवेश को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये। भारत द्वारा सेवा क्षेत्र की ही तरह विभिन्न क्षेत्रों (रक्षा, सूक्ष्म तकनीकी) में स्वदेशी तकनीकी और क्षमता के विकास को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

भारत–अमेरिका संबंधों के सुधार और दोनों देशों के अनेक क्षेत्रों (जैसे–तकनीकी, अर्थव्यवस्था आदि) के विकास में प्रवासी भारतीयों (वर्तमान आबादी लगभग 4 मिलियन) की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है, ऐसे में इस क्षेत्र में भी परस्पर सहयोग (जैसे–वीजा नियमों में सुधार आदि) के प्रयास किये जाने चाहिये। आतंकवाद के मुद्दे पर भारत को संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों के माध्यम से पाकिस्तान पर अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई (उदाहरण– प्रतिबंध) का प्रयास करना चाहिये। विश्व के अन्य क्षेत्रों (जैसे दक्षिण अफ्रीकी देशों) आदि में नए अवसरों की तलाश और चुनौतियों के निवारण जैसे प्रयासों के माध्यम से द्विपक्षीय सहयोग में वृद्धि की जानी चाहिये। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिये बहुपक्षीय गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

पावर पॉलिटिक्स

विश्व व्यवस्था के मुद्दों और लोकतांत्रिक आदर्शों से परे, भारत को चीन को संतुलित करने के लिए अमेरिका की जरूरत है. खासकर इसलिए क्योंकि हम सशस्त्र बलों और रक्षा औद्योगिक आधार को आधुनिक बनाने के लिए आवश्यक पुनर्गठन और सुधार को पूरा करने में विफल रहे हैं लेकिन उसी कारण से, अमेरिका को भी चीन की बढ़ती ताकत को दूर करने के लिए भारत की जरूरत है। इसलिए, भारत–अमेरिका संबंधों के पीछे एक शॉर्ट–टर्म लॉजिक है लेकिन

लंबी अवधि में, वो समझौते भारत के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह देश लोकतांत्रिक, आर्थिक रूप से जीवंत और तकनीकी रूप से उन्नत सभ्यता पाने की कोशिश कर रहे हैं। एक वैश्विक शक्ति जिसकी नियति के साथ–साथ उसकी निर्णय स्वायत्तता अपने हाथों में है। अमेरिका ने एक बार कहा था कि वह भारत को इसके लक्ष्य तक पहुंचने में सहायता करने के लिए तैयार है. लेकिन आज, उनकी अपनी विदेश नीति का संकुचित दृष्टिकोण इस वादे को कमजोर कर रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी एवं भारत अमेरिका सम्बन्ध

डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन के एक अधिकारी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारत और अमेरिका के बीच मधुर संबंध विकसित हुए हैं। उन्होंने आशा जताई कि लोकसभा चुनाव के बाद भी संबंधों में और सुधार होने की उम्मीद है। मोदी सरकार में भारत के विदेश सचिव विजय गोखले की अमेरिका की यात्रा पर किए गए एक सवाल के जवाब में अधिकारी ने कहा कि, जबसे मोदी ने सत्ता संभाली है तब से भारत–अमेरिका का संबंध वास्तव में फला–फूला है।

21 वीं शताब्दी में, भारत अमेरिकी संबंध भू– राजनितिक और वैश्विक रणनीतियों के लिए महत्वपूर्ण है। दोनों लोकतांत्रिक देशों के बीच बढ़ते संबंधों को 21 वीं शताब्दी की एक परिभाषित साझेदारी के रूप में देखा जा सकता है। यह साझेदारी अमेरिका में बढ़ती भारत की सॉफ्ट पॉवर के रूप में और भी मजबूत हो गई है।

अमेरिका–भारत रणनीतिक भागीदारी

अमेरिका–भारत रणनीतिक भागीदारी की रूपरेखा दोनों देशों को मजबूत करने तथा इस क्षेत्र पर लाभकारी प्रभाव के लिए बनाई गई है। अभी जो सिद्धांत गिनाए गए हैं वह इसमें सम्मिलित हैं तथा इन्हें अपनाने वाले किसी राष्ट्र के साथ कार्य करने का स्वागत है।

विगत वर्षों में अमेरिका और भारत ने मिलकर बहुत प्रगति की है। इसमें हमारा रक्षा सहयोग और संयुक्त सैन्य अभ्यास, उच्च प्रौद्योगिकी सहयोग समूह का कार्य रणनीतिक भागीदारी में अगला कदम, ऐतिहासिक नागरिक परमाणु समझौता, अमेरिका–भारत व्यापार में लगभग छह–गुणा वृद्धि, रक्षा प्रौद्योगिकी और व्यापार योजना तथा भारत को बड़े रक्षा भागीदार के रूप में नामित करना,

और वाणिज्य संबंधी बहुत सी अन्य योजनाएं, ऊर्जा, पर्यावरण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, और अन्य क्षेत्र शामिल हैं। गौरतलब है कि सरकार के कई बदलावों में हमारे प्रत्येक देश के बड़े पक्षों की ओर से मजबूत, दृढ़ और निरंतर सहयोग रहा है।

रक्षा और आतंकवाद से मुकाबला

पहला मुख्य स्तंभ है हिंद–प्रशांत क्षेत्र की दीर्घकालिक सुरक्षा और स्थायित्व को बढ़ाने के लिए रक्षा पर हमारा सहयोग तथा आतंकवाद से मुकाबला। इसका एक संबंध और समान रूप से महत्वपूर्ण उद्देश्य भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा के तंत्र प्रदाता, शांति के खतरे, विशेष रूप से भारतीय समुद्र और इसके आसपास के खतरे से सफलतापूर्वक निपटने में सक्षम बनाने के लिए सहयोग जारी रखना है। हम इस उद्देश्य को कई तरह से आगे बढ़ा सकते हैं।

भारत अमेरिकी सैन्य सहयोग बढ़ाने का एक तरीका है। सैन्य अभ्यास भारत और अमेरिका पहले से ही द्विपक्षीय अभ्यासों की विशाल श्रृंखला संचालित कर रहे हैं। हालांकि यह वास्तव में सिंगल–सर्विस रही हैं। यह समय शायद मानवीय सहायता और आपदा राहत पर केंद्रित बहु–सेवा अभ्यास पर विचार करने का है। सैन्य अभ्यासों का मामूली विस्तार दोनों देशों को एक–दूसरे से सीखने और एक साथ कार्य करने में सुविधा, सरलता और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध

अब हम रणनीतिक भागीदारी बनाने के दूसरे स्तंभ– आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध पर आते हैं। भारत आर्थिक विकास के मध्य में है तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था में पूरी तरह एकीकृत हो रहा है। परिणामस्वरूप भारत के साथ अमेरिकी व्यापार और निवेश विकसित हो रहे हैं। द्विपक्षीय व्यापार 2001 में 20 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2016 में 115 बिलियन डॉलर हो गया है। बेशक हमारे बाजारों का जो आकार दिया गया है उनमें वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह दोनों दिशाओं में होने काफी गुंजाइश है, और व्यापार को अधिक पारस्परिक बनने की प्रक्रिया में है। निष्पक्ष और संतुलित व्यापार सुनिश्चित करने के लिए अमेरिका के लिए अपने सभी भागीदारों के साथ कार्य करना महत्वपूर्ण है। हम लगातार व्यापार घाटे के प्रति चिंतित हैं, जिसमें भारत के

साथ व्यापार शामिल है।

हम सुधार एजेंडा, बाजार पहुंच, और बौद्धिक संपदा संरक्षण को और बढ़ावा देना जारी रखने के लिए भारत के कदमों का स्वागत करते हैं। हम भारत के साथ व्यापार और निवेश विवादों को तेजी से हल करने के लिए कार्य करना चाहते हैं। हमारे दृष्टिकोण में पूरी तरह मुक्त और निष्पक्ष व्यापार, भारत के अनवरत दीर्घकालिक विकास दर में सुधार करने के प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों को बढ़ाने में सहयोग करेगा। इस संबंध में वर्ल्ड बैंक की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूची में भारत को और ऊपर ले जाने की प्रधानमंत्री की दृढ़ता प्रेरणादायक है।

"अमेरिका फर्स्ट" और "मेक इन इंडिया" में विरोधाभास नहीं है बल्कि एक–दूसरे के बाजारों में निवेश करना पारस्परिक रूप से फायदेमंद होगा। यह हमारे आर्थिक आदान–प्रदान और व्यापार की मात्रा में वृद्धि, उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग का मार्गदर्शन और दोनों देशों में रोजगार पैदा करेगा। हमारे आर्थिक संबंधों में जोरदार बढ़ोत्तरी निश्चित रूप से व्यापक और गहरी दीर्घकालिक अमेरिकी प्रतिबद्धता के साथ अमेरिका–भारत रिश्ते में अधिक स्थायित्व प्रदान करेगी। यह हमारे बढ़ते रक्षा और आतंकवादरोधी भागीदारी का पूरक होगा, और इसके मार्ग में पैदा होने वाली किसी भी पॉलिसी मतभेदों को नियंत्रित करता है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर अमेरिका–भारत रणनीतिक भागीदारी के लिए बहुत महत्वाकांक्षी एजेंडा है। आज की अशांत दुनिया में, एक दृढ़ता है और साझेदारी की दृढ़ता हमेशा रहनी चाहिए। हम सच्चाई से विश्वास करते हैं कि भारत अमेरिकी सम्बन्ध यह अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में किसी भी रिश्ते की तरह महत्वपूर्ण है। हालांकि भारत और अमेरिका दोनों अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता को पोषित कर रहे हैं। हमारी भागीदारी का असली मूल्य यह है कि हमारे लोगों की सुरक्षा और समृद्धि के लिए वैश्विक मामलों को सकारात्मक रूप से प्रभावित और सबसे बड़ी आकांक्षाओं को प्राप्त कर सकने में सक्षम बना सकती है। निश्चित रूप से हमें मित्र के रूप में सम्मान, विश्वास, स्वीकृति, भरोसा, लचीलापन और स्थिरता के साथ अपने कार्य करने चाहिए।

राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत को सच्चा दोस्त कहा है और प्रधानमंत्री मोदी ने

प्रधानमंत्री वाजपेयी का कथन दोहराया है जिस में उन्होंने हमारे देशों को "स्वाभाविक मित्र" रूप में वर्णित किया है। अब यह हम पर निर्भर है कि आगे इस शब्दावली को यथार्थ रूप प्रदान करें। हमें एक मजबूत और टिकाऊ होने के साथ लचीली और अनुकूल भागीदारी का निर्माण करना चाहिए। आइए अपने सामने अवसरों को ग्रहण करें, ताकि भावी पीढ़ियां इस समय को अमेरिका–भारत संबंधों के वास्तविक रूपांतरण के रूप में देखें।

संदर्भ सूची

1– indiatimes–com

2. दृष्टि द विजन

3. यू.एस में भारतीय प्रवासी महत्वपूर्ण क्यों हैं, द इकनोमिक टाइम्स, 2018

4. भारतीय प्रवासी: जनजातीय और प्रवासी पहचान, सी.ए.आर.आई.एम भारत, 2013

5– inusembassy–gov

6 http://www.mfa.uz/en/cooperation/international/1170/